पाप को पराजित करना

सब्त अपराह्न **नवम्बर 11**

इस सप्ताह के अध्ययन के लिये पढ़ें: रोमियों 6;1 यूहन्ना 1:8, 2:1

याद वचन : *"और तुम पर पाप की प्रभुता न होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के अधीन नहीं वरन अनुग्रह के अधीन हो"*(रोमियों 6:14)

यदि कर्म हमें बचा नहीं सकते, उससे परेशान होने की क्या बात? क्यों न पाप ही करते रहें?

अध्याय 6 इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न के लिये पौलुस का उत्तर है। सामान्यतय: "पवित्रीकरण" के तौर पर यहाँ जो समझा जाता है पौलुस उसपर चर्चा करता है, उस प्रक्रिया के द्वारा जिससे हम पाप को पराजित करते हैं और अधिक से अधिक मसीह के चरित्र को प्रतिबिंबित करते हैं। शब्द पवित्रीकरण केवल दो बार रोमियों में प्रकट होता है। रोमियों 6:19, 22 में ग्रीक शब्द हेगियासमास (hagiasmos) के रूप में हुआ है जिसका अर्थ है पवित्रीकरण। अंग्रेजी में यह इन दो अवतरणों में प्रकट होता है जैसे शब्द "पवित्रता"।

क्या इसका अर्थ यह है कि पौलुस को पवित्रीकरण के विषय,जो सामान्यतया समझा जाता है, कुछ कहना नहीं है? बिल्कुल नहीं ।

बाइबल में "पवित्र करना" का अर्थ है आम तौर पर परमेश्वर को "समर्पित करना"। इस प्रकार, पवित्र किया जाना अतीत में संपन्न कर्म के तौर पर अकसर पेश किया जाता है। उदाहरण स्वरूप, "और सब पवित्रों में"(प्रेरित 20:32) इस परिभाषा में पवित्र किये हुए वे हैं जो परमेश्वर को समर्पित हैं।

परन्तु पवित्र करने का यह बाइबलीय चलन किसी भी तरह से पवित्रीकरण के महत्त्वपूर्ण सिद्धांत को इन्कार नहीं करता अथवा यह यथार्थ कि पवित्रीकरण जीवन काल का कर्म है। बाइबल इस सिद्धांत को मजबूती के साथ समर्थन करती है, परन्तु यह साधारणत: इसे वर्णन करने के लिये दूसरे शब्दावलियों को इस्तेमाल करती है।

इस सप्ताह हम विश्वास द्वारा धार्मिकता के दूसरे पक्ष को देखेंगे, एक जो सहजत: गलत समझा जा सकता है: मसीह द्वारा बचाये गये एक के जीवन में पाप पर विजय की प्रतिज्ञाएँ।

रविवार **नवम्बर 12**

जहाँ पाप बहुत हुआ

रोमियों 5:20 में, पौलुस एक सशक्त कथन पेश करता है: "परन्तु जहाँ पाप बहुत हुआ, वहाँ अनुग्रह उससे भी कहीं अधिक हुआ।" उसका तर्क है कि कोई बात नहीं कितना अधिक पाप वहाँ पर है या उसके परिणाम कितने बीभत्स हैं, इससे सामना करने के लिये परमेश्वर का अनुग्रह काफी है। कौन-सी आशा जो हमारे लिये कुछ लानी चाहिए, खास कर उस समय जब हम यह महसूस करने के लिये छले जाते हैं कि हमारे पाप उतने अधिक हैं कि क्षमा नहीं हो सकते। रोमियों 5:21 में पौलुस दिखाता है कि यद्यपि पाप ने मृत्यु का रास्ता दिखाया है, यीशु के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह मृत्यु को पराजित कर दिया है और हमें अनंत जीवन दे सकता है।

पढ़ें : रोमियों 6:1 पौलुस यहाँ पर किस तर्क का सामना कर रहा है, और रोमियों 6:2-11 में किस प्रकार क्या वह उस प्रकार की सोच का प्रत्युत्तर देता है?

अध्याय 6 में पौलुस तर्क के रोचक पंक्ति का पीछा करता है कि किस लिये एक धर्मी व्यक्ति को पाप नहीं करना चाहिए। साथ में शुरू करने के लिये, वह कहता है

कि हमें पाप नहीं करना चाहिये क्योंकि हम पाप में मरे हैं। तब वह अपने तात्पर्य को स्पष्ट करता है।

बपतिस्मा के पानी में डूबना गाड़े जाने को चित्रित करना है। क्या गड़ा गया है? पाप का "पुराना मनुष्यत्व" वह है, शरीर जो पाप करता है, शरीर जो पाप के अधीन हुआ या पाप द्वारा नियंत्रित होता है। परिणाम स्वरूप यह "पाप का शरीर" नाश कर दिया जाता है, ताकि हम और पाप की सेवा न करें। रोमियों 6 में एक मालिक के तौर पर, पाप साक्षात किया गया है, जो अपने सेवकों पर शासन करता है। एक बार "पाप का शरीर" जो पाप की सेवा करता था नष्ट कर दिया जाता है, पाप की प्रवीणता खत्म कर दी जाती है। वह जो पानी रूपी कब्र से जी उठता है एक नये प्राणी के रूप में उभरता है, जो अब पाप की और सेवा नहीं करता। वह जीवन के नयेपन में चलता है।

मसीह, मरकर, सभों के लिये मरा, पर अब वह हमेशा के लिये जीवित है। अत: मसीही में जो बपतिस्मा लेता है एक बार पाप में मरा और फिर कभी इसके शासन के अधीन नहीं आयेगा। अवश्य ही, जैसे कोई बपतिस्मा प्राप्त मसीही जानता है, पाप स्वत: हमारे जीवनों से चला नहीं जाता जब एक बार हम पानी से बाहर निकल आते हैं। पाप द्वारा शासित नहीं होने का अर्थ यह नहीं कि हम पाप से संघर्ष नहीं करते।

इसके द्वारा हम स्पष्ट रूप से देखते हैं प्रेरित के वचन का क्या अर्थ है। सभी ऐसे कथन जैसे : 1. 'हम पाप में मरे', 2. 'हम परमेश्वर में जीवित हैं', इत्यादि, जाहिर करता है कि हम हमारे पापमय जुनून के अधीन और पाप के अधीन नहीं हैं, जैसा कि पाप हम में निरंतर है। फिर भी पाप हमारे जीवन के अंत तक हमारे साथ रहता है जैसे हम गलातियों 5:17 को पढ़ते हैं: "क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में लालसा करता है, और ये एक दूसरे के विरोधी हैं। इसलिये सभी प्रेरित और संत अंगीकार करते हैं कि पाप और पापपूर्ण जज्बा हम में रह जाता है जब तक यह शरीर राख में तबदील नहीं हो जाता, और एक नया (महिमायुक्त) शरीर उठ खड़ा होता है जो जुनून और पाप से मुक्त है।" - *मार्टिन लूथर, कॉमेंटरी ऑन रोमन्स, पेज 100* ।

सोमवार **नवम्बर 13**

जब पाप शासन करता है

रोमियों 6:12 में हमें क्या सलह दी गई है?

शासन शब्द दर्शाता है कि "पाप" को यहाँ पर राजा की तरह पेश किया गया है। ग्रीक शब्द "शासन" के तौर पर यहाँ रूपांतरित हुआ है जिसका शाब्दिक अर्थ है "एक राजा होना" या "राजा की तरह कार्य करना।" पाप हमारे मरणशील शरीरों में राजपद की कल्पना करता है और हमारे व्यवहार को निर्देश देता है।

जब पौलुस कहता है "पाप को शासन करने मत दो ....," वह समझाता है कि धर्मी जन पाप की रोकथाम करने को चुनता है और अपने जीवन में इसके राजत्व को समाप्त करता है यह है जहाँ इच्छा का काम अन्दर से आता है।

जो आपको समझने की जरूरत है वह है इच्छा की सच्ची ताकत। मनुष्य के स्वभाव में यह शासकीय ताकत है, निर्णय की ताकत या इसका चुनाव। सब कुछ इच्छा के सही कार्य पर निर्भर करता है। चुनने की शक्ति परमेश्वर ने मनुष्य को दी है; अभ्यास करना उनका काम है। आप अपने हृदय को बदल नहीं सकते, आप स्वयं को परमेश्वर का स्नेह नहीं दे सकते; परन्तु आप उसकी सेवा करने को चुन सकते हैं। आप अपनी इच्छा उसे दे सकते हैं; वह तब आप में कार्य करेगा। इच्छा हेतु और उसकी इच्छानुसार काम करने के निमित्त। इस प्रकार आपका संपूर्ण स्वभाव मसीह के आत्मा के नियंत्रण के अधीन लाया जायेगा; आपका स्नेह उस पर केंद्रित होगा, आपके विचार उसकी संगति में

होंगे।" ..... *एलेन जी० ह्वाईट, ख्रीस्त की ओर कदम, अंग्रेजी, पेज में 47 ।*

रोमियों 6:12 में ग्रीक शब्द "कामुकता" अनुवादित है जिसका अर्थ है "अभिलाषाएँ"। ये अभिलाषाएँ या तो अच्छी चीजों के लिये या बुरी चीजों के लिये हो सकती है; जब पाप शासन करता है, यह हमें बुरी चीज़ की लालसा करायेगा। लालसाएँ मजबूत होंगी, यदि हम स्वयं उनके खिलाफ युद्ध करते हैं तो ये प्रबल होंगे। पाप क्रूर शासक हो सकता है, जो कभी संतुष्ट नहीं होता, परन्तु हमेशा अधिक की चाह में वापस आ जाता है। केवल विश्वास के द्वारा, विजय की प्रतिज्ञाओं को दावा करने के द्वारा इस निर्दयी मालिक को हम उखाड़ फेंक सकते हैं।

इसलिये रोमियों 6:12 का शब्द महत्त्वपूर्ण है। यह उसके पास वापस चला जाता है जो पहले कहा जा चुका है, खासकर उसके पास जो रोमियों 6:10,11 में कहा जा चुका है। बपतिस्मा प्राप्त व्यक्ति अब मसीह में जीवित है। यह है, परमेश्वर उसके नये जीवन का केंद्र है। वह व्यक्ति परमेश्वर की सेवा कर रहा है, वह करता है जो परमेश्वर को आनंदित करता है और इसलिये वह इस समय पाप की सेवा नहीं करता। वह यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर में जीवित है।"

आज के अध्ययन में एलोन जी० ह्वाईट के उद्धहरण में वापस जायें। ध्यान दें स्वतंत्र संकल्प की अवधारणा कितनी निर्णायक है। नैतिक जीवों के तौर पर हमारे लिये स्वतंत्र संकल्प होना जरूरी है - भले और बुरे को चुनने की शक्ति, अच्छा और बुरा मसीह या संसार। अगले 24 घंटों में, जागरूकता के साथ पता लगाएँ कि इस स्वतंत्र संकल्प को आप कैसे व्यवहार कर रहे हैं। इस पवित्र उपहार के आप के उपयोग या दुरुपयोग के विषय में आप क्या सीख सकते हैं?

मंगलवार **नवम्बर 14**

व्यवस्था के अधीन नहीं पर अनुग्रह के अधीन

पढ़ें : रोमियों 6:14, यह पद हमें किस प्रकार समझना है? क्या इसका अर्थ यह है कि दस आज्ञाएँ अब हमारे लिये बंधन नहीं रह गई हैं? यदि नहीं तो क्यों नहीं?

रोमियों की किताब में रोमियों 6:14 मुख्य कथनों में से एक है और यह एक है हम अकसर किसी को हमें एडवेंटिस्ट कहते हुए संदर्भ में उदाहरण को सुनते हैं कि सेवेंथ-डे सब्त निरस्त कर दिया गया है।

तथापि यह स्पष्ट नहीं इस अवतरण का क्या तात्पर्य है। जैसे हमने पहले पूछा, नैतिक व्यवस्था कैसे समाप्त की जा सकती है और पाप अभी भी एक वास्तविकता है? क्योंकि नैतिक व्यवस्था वह है जो पाप को परिभाषित करती है। यदि आपको वे सब पढ़ने होते जो रोमियों में पहले ही आया इतना तक कि अध्याय 6, इसे देखना कठिन है क्यों पाप की वास्तविकता के विषय में इन सभी विचार-विमर्श के बीच में, पौलुस अचानक कह सकता "नैतिक व्यवस्था - दस आज्ञाएँ, जो पाप को परिभाषित करती है - समाप्त (मिटा) कर दी गई है।" इसका कोइ औचित्य नहीं।

पौलुस रोमियों को कह रहा है कि व्यक्ति जो "व्यवस्था के अधीन" जीवित है, जैसा यहूदी अर्थव्यवस्था की पालना उसके दिनों में की जाती थी, सभी मानव निर्मित नियम एवं कानून के साथ -पाप के द्वारा शासित होना । विपरीत इसके, एक व्यक्ति जो अनुग्रह के अधीन रह रहा है उसे पाप में विजय मिलेगी, क्योंकि व्यवस्था उसके हृदय में लिखी गई है और परमेश्वर` की आत्मा को अनुमति मिली है कि उसके कदमों की अगुवाई करे । मसीहा के तौर पर यीशु को ग्रहण करना, उसके द्वारा धर्मी ठहराया जाना, उसकी मृत्यु में बपतिस्मा लेना, "पुराने मनुष्यत्व" का नाश, जीवन के नयेपन में चलना - ये चीजें हैं जो पाप को हमारे जीवन से अपदस्थ करेंगी । याद रखें; यह पूरा संदर्भ है

जिसमें रोमियों 6:14 प्रकट होता है - पाप पर विजय की प्रतिज्ञा।

"व्यवस्था के अधीन" को हमें उतना अधिक प्रतिबंधात्मक रूप से परिभाषित नहीं करना चाहिए। माना एक व्यक्ति "अनुग्रह के अधीन" रहता है परन्तु परमेश्वर की व्यवस्था को नहीं मानता वह अनुग्रह को प्राप्त नहीं करेगा वरन् अपराधी ठहराया जायेगा। "अनुग्रह के अधीन" का अर्थ यह कि परमेश्वर का अनुग्रह जैसा मसीह हमें प्रकट हुआ, दोष जो व्यवस्था निसंदेह पापियों पर लाता है हटा दिया गया है। इस प्रकार, व्यवस्था द्वारा लाये गये इस मृत्यु के अपराध से अब मुक्त होकर हम "जीवन के नयेपन" में जीते हैं एक जीवन जो चरित्रित किया गया और यथार्थ द्वारा प्रकट हुआ कि स्वयं में मरकर हम पाप के गुलाम अब नहीं रहे।

मसीह में नये जीवन की वास्तविकता को आपने कैसे अनुभव किया है? कौन-सा स्पर्श योग्य प्रमाण आप दे सकते हैं जो प्रकट करता है जिसे मसीह ने आप में किया है? कौन-सा क्षेत्र है आप जाने देने से इन्कार कर रहे हैं, और आप को क्यों उन्हें जाने देना चाहिए?

बुधवार **नवम्बर 15**

पाप का आज्ञापालन?

पढ़ें : रोमियों 6:16 पौलुस कौन-सा तर्क पेश कर रहा है? उसका तर्क क्यों बहुत साधारण है? यह या तो एक या अन्य, केंद्रीय भूमिका के बिना। इस स्पष्ट भेद से हमें क्या पाठ सीखना चाहिए?

पौलुस पुन: बिन्दु पर वापस आता है कि विश्वास का नया जीवन पाप से स्वतंत्रता की गारंटी नहीं देता। विश्वास का जीवन पाप पर विजय को संभव बनाता है; असल में हम विश्वास के द्वारा विजय प्राप्त कर सकते हैं जो हमें प्रतिज्ञा की गई है। अपनी प्रजा पर शासन करने वाले राजा की तरह पाप का मानवीकरण करके, पौलुस अपने दासों की आज्ञाकारिता की मांग करने वाले मालिक की तरह पाप की आकृति पर वापस आता है। पौलुस संकेत करता है कि एक व्यक्ति के पास मालिकों को चुनाव करने का अधिकार है। वह पाप की सेवा कर सकता है, जो उसे मृत्यु को ले जाता है, या वह धार्मिकता की सेवा कर सकता है, जो उसे अनंत जीवन की ओर ले जाता है। पौलुस हमें समझौता करने को नहीं छोड़ देता है। यह एक अनेक है, क्योंकि अंत में हम या तो अनंत जीवन या अनंत मृत्यु का सामना करते हैं।

पढ़ें : रोमियों 6:17. रोमियों 6:16 में उसने जो कहा यहाँ पर कैसे विस्तार देता है?

ध्यान दें कैसे आज्ञाकारिता काफी रोचकता से सही सिद्धांत से जुड़ी हुइ है। "सिद्धांत" के लिये ग्रीक शब्द का अर्थ है "शिक्षा"। रोमी मसीहियों को मसीही विश्वास के सिद्धांत सिखलाया गया था, जिसे वे अब मानते थे। इस प्रकार पौलुस के लिये, सही सिद्धांत, सही शिक्षा, जब हृदय से मानी गई, रोमियों को "धार्मिकता के दास" बनने में मदद की (रोमि० 6:18) कभी-कभी हम सुनते हैं कि सिद्धांत का कोई मतलब नहीं, जबतक हम प्यार दिखाते हैं। वह जो इतना साधारण नहीं है उसको अति सरल ढंग से व्यक्त किया गया है। जैसा प्रारंभिक पाठ में वर्णन किया गया है। पौलुस झूठे सिद्धांत के विषय में बहुत चिंतित था जिस पर गलातिया की कलीसिया परास्त हो गई थी। इस प्रकार अभिव्यक्तियों के विषय हमें सावधान रहने की जरूरत है जो किसी भी तरह से सही शिक्षा की महत्ता को बदनाम करती है।

पाप के दास, धार्मिकता के दास: की तुलना बहुत कठोर है। यदि हम बपतिस्मा के बाद पाप करते हैं, क्या इसका अर्थ यह है कि हम वास्तव में बचाये नहीं गये हैं? पढ़ें

1 यूहन्ना 1:8-2:1, यह अनुच्छेद हमें समझने में कैसे मदद करता है। मसीह का अनुगामी होने का क्या अर्थ है और अभी भी गिरने के अधीन है?

बृहस्पतिवार **नवम्बर 16**

पाप से स्वतंत्रता

मन में रखते हुए जो हमने रोमियों 6 में इतनी दूर तक अध्ययन किया है, पढ़ें रोमियों 6:19-23, नीचे की पंक्तियों में सारांश लिखें जिस सार के विषय पौलुस कह रहा है। बहुत महत्त्वपूर्ण, स्वयं से पूछें निर्णायक सच्चाईयों को जिसे पौलुस संक्षेपित कर रहा है आपके जीवन में इसे वास्तविकता कैसे बना सकते हैं? स्वयं से पूछें कौन से विषय हैं जो दाँव पर लगे हैं।

पौलुस के शब्द यहाँ पर दिखाते हैं कि वह मानव के पतित स्वभाव को पूरी रीति से समझता है। वह आपके "दुर्बल मानव देह" के विषय बातें करता है। ग्रीक शब्द "दुर्बलता" का अर्थ भी "कमजोरी" होता है। वह जानता है पतित मानव स्वभाव जब इसे स्वयं पर छोड़ा जाये कितना सक्षम है। इस प्रकार, वह शक्ति फिर चुनाव की शक्ति के लिये अपील करता है - शक्ति जिसके द्वारा हम स्वयं को समर्पित करने के लिये चुनते हैं और हमारे कमजोर शरीर को नये मालिक यीशु पर समर्पित करने के लिये, जो हमें धर्मी जीवन जीने में सक्षम बनायेगा।

इसे दिखाने के लिये रोमियों 6:23 अकसर उद्धृत किया जाता है कि पाप जो व्यवस्था का उल्लंघन है - का दण्ड मृत्यु है। निश्चित रूप से पाप का दण्ड मृत्यु है। परन्तु मृत्यु को पाप के दण्ड के तौर पर देखने के अतिरिक्त, जैसा पौलुस रोमियों 6 में वर्णन करता है हमें पाप को एक मालिक की तरह देखना चाहिए जो अपने सेवकों पर राज करता है उन्हें पाप की मजदूरी देने के द्वारा उन्हें धोखा देता है।

इसे भी ध्यान दें कि उसके दो मालिकों की आकृति के विकास में पौलुस यथार्थ पर ध्यान देने की बात करता है कि एक मालिक की सेवा का अर्थ है दूसरे मालिक से मुक्ति। पुन: हम स्पष्ट चुनाव को देखते हैं : एक या अन्य यहाँ पर कोई केंद्रीय भूमि नहीं है। उसी समय, जैसा हम सब जानते हैं पाप के राज्य से छूटकारे का अर्थ पाप रहित होना नहीं है, इसका यह अर्थ नहीं कि हम संघर्ष न करें और न कभी गिर सकते हैं। इसका अर्थ कि हम पाप के राज्य में नहीं हैं, यद्यपि अधिक वास्तविकता हमारे जीवन में रह जाती है और इस विजय की प्रतिज्ञा का हमें प्रतिदिन दावा करना चाहिए।

इस प्रकार, यह अनुच्छेद उसके लिये सशक्त अपील बन जाता है जो पाप की सेवा कर रहा है। यह क्रूर शासक कुछ नहीं पर लज्जाजनक काम के लिये मृत्यु की मजदूरी देता है; इसलिये, एक विवेकशील व्यक्ति को इस क्रूर शासक से आजादी की इच्छा करनी चाहिए। इसके विपरीत वे जो धार्मिकता की सेवा करते हैं उन चीजों को करते हैं जो सही है और प्रशंसा के लायक हैं, यह उनके उद्धार अर्जित करने के विचार से नहीं, परन्तु उनके नये अनुभव के फलस्वरूप । यदि वे उद्धार अर्जित करने के प्रयास में काम कर रहे हैं तब वे सुसमाचार के संपूर्ण बिन्दु को खो दे रहे हैं, उद्धार के संपूर्ण बिन्दु को, और संपूर्ण बिन्दु को कि उन्हें यीशु की जरूरत क्यों है।

शुक्रवार नवम्बर 17

अतिरिक्त विचार : एलेन जी० ह्वाईट की किताब पढ़ें, मैसेजे ऑफ यंग पीपुल में, "विक्ट्री आप्रॉप्रियेटेड", पेज 105, 106; थॉट्स फ्राँम द माउण्ट ऑफ ब्लेसिंग में, "द ट्रू मॉटिव इन सर्विस", पेज 93-95; टेस्टीमॉनिज फॉर द चर्च में, "अपील टू द यंग,"

पेज, 365; द एस०डी०ए० बाइबल कामेंटरी, वॉल्यूम 6 पेज 1074, 1075. "उसने (यीशु ने) पाप की स्वीकृति नहीं दी। उसने विचार से भी छल (परीक्षा) को नहीं लाया। हमारे साथ भी ऐसा ही होवे। मसीह की मानवता ईश्वरत्व के साथ एकजुट थी; वह पवित्र आत्मा की संगति के द्वारा संघर्ष के लिये उपयुक्त था। वह हमें ईश्वरीय स्वभाव का सहभागी बनाने के लिये आया। इतनी देर तक जब हम विश्वास के द्वारा उसके साथ जुड़े रहते हैं; पाप का हमारे ऊपर राज्य नहीं रह जायेगा। मसीह के ईश्वरत्व को पकड़े रहने के लिये, हम में विश्वास के हाथ को निर्देशित करने के लिये परमेश्वर पहुँच बनाता है, ताकि हम चरित्र के संपूर्णता को प्राप्त कर सकें।" - *एलेन जी० ह्वाईट, द डिजायर ऑफ एजेस, पेज 123.*

"हमारे बपतिस्मे के समय हमने स्वयं शैतान और उसकी एजेन्सियों के साथ सभी संबंध को तोड़ने का और हृदय और मन और आत्मा को परमेश्वर के राज्य के विस्तार के काम में लगाने का संकल्प लिया .... पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा परिष्कृत मानव औजारों के साथ सहयोग करने का संकल्प लेते हैं।" - *एलेन जी० ह्वाईट कॉमेंट्स, द एस०डी०ए० बाइबल कॉमेंटरी, बॉल्यूम 6, पेज 1075*

"मसीहियत की घोषणा बिना विश्वास के अनुरूपता के और काम कुछ लाभ नहीं ले पायेगा। कोई भी व्यक्ति दो मालिकों की सेवा नहीं कर सकता। दुष्टों की संतान स्वयं उनके मालिक के दास हैं, जिसको ये स्वयं को दासों की तरह मानने को प्रस्तुत करते हैं, वे उसके दास हैं, और वे परमेश्वर के दास नहीं हो सकते जब तक वे शैतान और उसके सभी कामों को अस्वीकार नहीं करते। खुशी और आनन्द में शामिल होना, स्वर्गीय राजा के सेवकों के लिये हानि रहित नहीं हो सकता जिसमें शैतान के दास लगे हुए हैं कि वे अकसर दुहराते हैं कि ऐसे आनंद हानिरहित हैं। परमेश्वर ने अपने लोगों को अधर्म से अलग होने और उसके निमित्त पवित्र होने के लिये पवित्र और पावन सत्यों को प्रकट किया है। सेवेंथ-डे ऐडवेंटिस्ट लोगों को अपना विश्वास जीना चाहिए।" - *एलेन जी० ह्वाईट, टेस्टीमोनीज फॉर द चर्च वाल्यूम 1, पेज 404* ।

विचार विमर्श के लिये प्रश्न :

- यद्यपि पाप पर विजय की ये सब अद्‌भुत प्रतिज्ञाएँ हमारे लिये हैं, यथार्थ यह है कि हम सब नया जन्म लिये मसीही, अवगत हैं कि हम कितने पतित हैं, कितने पापी हैं; और हमारा हृदय कितना विकृत हो सकता है। क्या यहाँ पर कोई अंतर्विरोध है, अपने उत्तर की व्याख्या करें।
- कक्षा में गवाही दें कि मसीह ने आप में क्या किया है, जैसा कि आपने बदलाव का अनुभव किया है, और जैसा कि आपको उसमें नया जीवन प्राप्त है।
- फिर भी यह महत्त्वपूर्ण है कि हम सदैव याद करते हैं कि हमारा उद्धार उस पर स्थिर है जो मसीह ने हमारे लिये किया है, कौन-सा खतरा खड़ा होता है यदि हम अत्यधिक बल उद्धार के दूसरे भाग के उस अद्‌भुत सत्य के बहिष्कार पर देते हैं : वह जिसे यीशु हमें अपने स्वरूप में बदलने के लिये हममें करता है? हमें उद्धार के इन दोनों पहलुओं को समझना और जोर देना क्यों जरूरी है?